नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक

UGC-CARE Listed ISSN: 2349-4654
वर्ष : 12, अंक : 1, जनवरी 2024

पंजाबी लोक संगीत में प्रयुक्त नाट तकनीकें

डॉ. मनप्रीत सिंह
सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग, गुरु नानक कॉलेज, बुढलाडा (पंजाब)

सार-संक्षेप

इस शोध-पत्र का विषय 'पंजाबी लोक संगीत में प्रयुक्त नाट तकनीकें' है। इस शोध-पत्र में संगीत के अंग विशेषकर गायन और नृत्य की प्रस्तुति में नाट तकनीकों की भागीदारी का विश्लेषण किया गया है। इस शोध-पत्र में पंजाब की प्रसिद्ध गायन और नृत्य शैलियों को आधार बनाया गया है। संगीत में गायन, वादन और नृत्य का समावेश माना जाता है। जब के संगीत प्रस्तुति में नाट का समावेश अप्रत्यक्ष रूप में किया जाता है। इसके बारे में हमारे विद्वानों ने बहुत कम बात की है। इस शोध-पत्र के माध्यम से विद्वानों और रिसर्च स्कॉलरों का ध्यान इस विषय की ओर दिलवाना है। लोक संगीत की प्रस्तुति विशेषकर गायन और नृत्य में नाट तकनीकों की तरफ ध्यान दिए जाना अति आवश्यक है ताकि गायन और नृत्य की पेशकारी को और मनोरंजक और प्रभावी बनाया जा सके। इस शोध-पत्र में विवरणात्मक अनुसन्धान विधि का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्द : भारतीय संस्कृति, लोक संगीत, नाट तकनीकें, अनबद्ध गायन शैलियाँ, लोक नृत्य

शोध-पत्र

संगीत के विभिन्न अंग गायन और नृत्य की प्रस्तुति में प्रयुक्त नाट तकनीकें प्रस्तुति का अभिनय अंग है। इन तकनीकों का अध्यन करके संगीत प्रस्तुति को और प्रभावी बनाया जा सकता है।

लोक व्यवहार का मुख्य स्रोत परम्परा है। परम्पराएँ मजबूत और परिपक्व होती हैं क्योंकि यह सैकड़ों, हजारों वर्षों के अनुभव पर आधारित होती हैं। लोगों का मन इन्हीं परम्पराओं में जीता और मरता है। पंजाब की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यह सदैव कृषि, उद्योग, राजनीति का केन्द्र बिन्दु रहा है। यही कारण है कि यहाँ की संस्कृति सदैव विविधता का प्रतीक रही है। परिणामस्वरूप, पंजाब की संस्कृति, विशेषकर संगीत ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया है। संगीत में यहाँ गायन, वादन और नृत्य का सीधा संबंध है, वहीं नाटक भी संगीत की प्रस्तुति में अहम भूमिका निभाता है। इस शोध-पत्र में लेखक ने पंजाबी लोक संगीत, विशेषकर विभिन्न गायन और नृत्य विधाओं में नाट तकनीकों की भागीदारी और महत्त्व को दर्शाने का प्रयास किया है।

पंजाब का इतिहास विविधताओं से भरा है। यह विविधता इसकी भौगोलिक स्थिति, समय-समय पर बदलती सीमाओं, विदेशी आक्रमणों, शुद्ध हवा-पानी, उपजाऊ मिट्टी आदि अन्य कारकों के कारण है। शुद्ध हवा-पानी और उपजाऊ मिट्टी की विविधता के कारण पंजाब हमेशा समृद्ध रहा है। इसी कारण इस क्षेत्र को विभिन्न देश विदेश से आए लोगों ने अपनी कर्म भूमि बनाया। परिणाम स्वरूप यहाँ विभिन्न संस्कृतियों का मिलन हुआ और नए कला जगत का आरम्भ हुआ।

यहाँ एक तरफ यह समृद्धि इस क्षेत्र में वरदान सिद्ध हुई वहीं यह समृद्धि समय-समय पर मुसीबतों को साथ लेकर आई और हमेशा हमलावरों और विदेशी आक्रमणकारियों का ध्यान आकर्षित करती रही है। दूसरा पश्चिम की ओर से भारत का प्रवेश द्वार होने के कारण, पंजाब हमेशा हमलावरों और विदेशी आक्रमणकारियों के लिए भारत पर हमला करने का मार्ग रहा है। इसी के कारण पंजाब के मर्दों का स्वभाव आक्रामक सा रहा है। 'भारत को सोने की चिड़िया समझ सिकंदर यूनानी, कनिष्क, गजनवी, गोरी, तैमूर और नादिर शाह, अब्दाली जैसे आक्रांताओं के आए दिन के हमलों ने पंजाबियों को युद्धप्रिय प्रवृत्ति के मालिक बना दिया।' (गुरनाम सिंह 1) इस प्रकार, पंजाब की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थितियाँ हमेशा ऐसी रहीं। इस उतार-चढ़ाव के दौर में भारतीय संस्कृति का बीज इसी भूमि पर अंकुरित और विकसित हुआ।

पंजाब की पवित्र भूमि ने शुरू से ही भारतीय संस्कृति और संगीत के विकास में महान योगदान दिया है। वेदों की रचना और साम गीतों की रचना इसी क्षेत्र में हुई मानी गई है। 'यह वह भूमि है जिसके आकाश मण्डल में प्रथम सभ्यता की स्वर्णिम प्रभात चमकी। इसी पवित्र भूमि पर विश्व के प्रथम सभ्य मनुष्य ने जन्म लिया और भारतीय संस्कृति की नींव रखी। 'साम गीतों' की मधुर ध्वनि सबसे पहले इसी रंगीली धरती पर सुनी गई।' (तारा सिंह 10) इसी प्रकार अगर हम नृत्य कला की बात करें तो इस कला का प्रारंभिक साक्ष्य भी पंजाब की धरती पर ही मिलता है। डॉ. हरचरण सिंह का संदर्भ देते हुए अजीत सिंह औलख लिखते हैं,

''सिंधु घाटी, मोहनजोदड़ो की खुदाई के दौरान नृत्य करती हुई लड़की की कांस्य प्रतिमा मिली है, जिससे यह सबूत मिलता है कि सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान पंजाब में नृत्य का विकास हो चुका था। नृत्य कला के अंदर ही नाट कला का बीज छुपा हुआ था। यह नृत्य कला ही थी जिसमें कहानी के संयोजन से नाट कला की नींव पड़ी।'' (औलख 98) डॉ. अजीत सिंह औलख एक और कथन के द्वारा भी उपरोक्त तथ्य की पुष्टि करते हैं, ''नाटक मनुष्य की दो चेष्टाओं, नृत्य देखने की आदत और कहानी सुनने की आदत से पैदा हुआ।'' (औलख 97)

नृत्य का आधार संगीत है। चाहे वह गायन हो या वाद्ययंत्र, संगीत के बिना नृत्य संभव नहीं है। यद्यपि संगीत की उत्पत्ति मनुष्य के मूल लक्षणों से मानी जाती है परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि नृत्य की उत्पत्ति से पहले ही संगीत अपना व्यवस्थित रूप ले चुका था। भारत में संगीत की व्यापकता का पहला आभास हमें वैदिक दर्शन से मिलता है। तब भी भारतीय संगीत मुख्यतः दो रूपों में विभाजित था, देशी और मार्गी संगीत। वर्तमान में, लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत क्रमशः देसी और मार्गी संगीत का अनुसरण करते दिखाई पड़ते हैं।

शास्त्रीय संगीत में नाट कला का संयोजन अगर नृत्य के सन्दर्भ में देखें तो चेहरे के भावों तक ही सीमित है, जबकि लोक संगीत एक कहानी का समावेश होने के कारण नाट कला के मूल गुणों को धारण करता है। 'यह देखा जा सकता है कि गायन प्रदर्शन में, शरीर की भाषा और आवाज की भाषा न केवल एक-दूसरे की पूरक होती है, बल्कि एक साथ मिश्रित भी होती है। इसलिए, बॉडी लैंग्वेज का उचित प्रशिक्षण बहुत महत्त्वपूर्ण है।' किसी भी प्रकार की प्रस्तुति के लिए गाँठ क्रियाएँ यानी शारीरिक मुद्राएँ बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं। 'मंच पर अपनी शारीरिक भाषा, चेहरे के भाव और समग्र आचरण पर काम करें। अच्छी मुद्रा बनाए रखें, दर्शकों से नजरें मिलाएँ और अपने हावभाव और भावों के माध्यम से भावनाएँ व्यक्त करें।' (Linkedin)

गायन के साथ-साथ संगीत प्रदर्शन में भी विभिन्न मुद्राओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'प्रदर्शन के दौरान हाथ और उँगलियों की गतिविधियों में समन्वय स्थापित करने की कुशल संगीतकारों की क्षमता प्रभावशाली और कभी-कभी मंत्रमुग्ध कर देने वाली भी होती है।' (Research Gate)

पंजाब के लोक संगीत के जिन प्रकारों में नट भागों का विशेष महत्त्व है उनमें कविशरी[1], वार[2], दोगाना गायकी[3], किस्सा गायन[4] और नृत्य में झूमर[5], गिद्दा[6], मलवई गिद्दा[7] प्रमुख हैं।

पंजाब की दो लोकप्रिय अनबद्ध गायन शैलियाँ अपनी अनूठी और विशिष्ट गायन शैली के कारण पंजाबी कला जगत में एक विशेष स्थान रखती हैं। ये गायन शैलियाँ हैं—पुरुषों द्वारा प्रस्तुत कविशरी और महिलाओं द्वारा प्रस्तुत लम्बी हेक वाले पारंपरिक गीत। इनमें लम्बी हेक वाले गीत महिलाओं की कोमल भावनाओं और मानसिक संवेदनाओं को व्यक्त करते हैं, और कविशरी अपनी विशेष पद्य संरचना के कारण कला का सर्वोच्च उदाहरण है। कविशरी शब्द की उत्पत्ति कवि शर से हुई है, जिसका अर्थ है कवि द्वारा निर्मित। 'कविशर शब्द कविओइशर से लिया गया है, जिसका अर्थ है, शिरोमणि कवि, कवि राज। (नाभा 234) आम तौर पर, एक लोक कथा या मौखिक कथा कविशरी का विषय है। इनके इलावा धार्मिक प्रसंग, प्रेम कथाएँ, दस्यु नायकों की कहानियाँ, ऐतिहासिक युद्धों के नायकों के वीरतापूर्ण कार्य और उपाख्यान भी इनके सन्दर्भों का आधार बनते हैं। इस गायन शैली में करुणा और वीर रस का समावेश होता है। कविशरी पद विधान की दृष्टि से एक श्रेष्ठ काव्य रचना है, जो बिना किसी वाद्य के केवल लय के आधार पर गाया जाता है। मुख्य कवि कथा या प्रसंग के माध्यम से श्रोताओं से संवाद करता है। संवाद नाटकीय होता है।

कविशरी के समान वार गायन शैली पारंपरिक वाद्ययंत्रों जैसे ढ़ड़, सारंगी आदि की मदद से गाई जाती है। इसमें युद्ध में किसी वीर योद्धा की कहानी, जागीरदारों का संघर्ष या किसी लोकप्रिय नायक के कारनामे गाकर सुनाए जाते हैं। युद्ध गीत के प्रदर्शन के दौरान, सारंगी वादक एक उपयुक्त माहौल बनाने के लिए लोगों की एक बड़ी भीड़ के सामने मंच पर अलंकार नामक पारंपरिक धुन बजाता है। दो युगल गायक ढ़ड़[8] बजाते हुए मंगलाचरण का पाठ करते हैं। फिर जत्थेदार (कहानी सुनाने वाला प्रमुख ढाड़ी) कहानी शुरू करता है। इस मण्डली को ढाड़ी जत्था कहा जाता है। जब वह ऊँचे और लंबे स्वर में एक योद्धा की प्रशंसा करता है, तो श्रोतों का खून उत्साह से खौल उठता है। प्रत्येक वार के गायन के बाद ढाड़ी समूह का नेता पाठ करता था। युद्ध की कहानी जैसे गाई जाती है वैसे ही चलती रहती है। कथावाचक की कुशलता ही ढाड़ी जत्था की जान होती है। सुनाते समय वह एक तरह से कहानी के कुछ हिस्सों का अभिनय भी कर रहे होते हैं और अलग-अलग किरदारों की भूमिका भी निभाते हैं। ढाड़ी मंडली की प्रतिष्ठा एक निश्चित स्वभाव के साथ कहानी कहने और अभिनय के माध्यम से कहानी में प्रासंगिक रस उत्पन्न करने की क्षमता पर टिकी होती है। वार गायन और अभिनय इतना प्रचंड होता है के इससे सुनकर आम सा दिखने वाला व्यक्ति भी हथियार उठा कर योद्धा के जैसे मैदान में कूद पड़ता था। लोगों की कल्पना पर इसकी पकड़ इतनी मजबूत थी कि सिक्ख गुरुओं ने भी लोगों को उपदेश देने के लिए वार शैली का प्रयोग अपने वाणी में किया।

करीब एक दशक पहले तक पंजाब में युगल गायन को खूब बढ़ावा मिला। युगल गायन स्त्री-पुरुष के आपसी संवाद पर आधारित है। युगल गायन में देवर-भाभी, जेठ-भाभी, जीजा-साली, प्रेमी-प्रेमिका, साधु-चेली जैसे सामाजिक रिश्तों को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। गायक संबंधित पक्ष के चरित्र का निर्माण करते हैं। सामाजिक जीवन के उतार-चढ़ाव, नोक-झोंक, क्रोध-भीषण, प्रेम संवाद युगल गायन के मुख्य विषय हैं। संवाद नाटकीय तत्त्वों से भरपूर हैं, जो तथाकथित सांस्कृतिक मूल्यों की बेड़ियों द्वारा थोपे गए नैतिक विचारों के विद्रोह से उत्पन्न होते हैं। अमर सिंह चमकीला, मोहम्मद सद्दीक और रणजीत कौर, दीदार संधू और अमर नूरी, सुरिंदर शिंदा और गुलशन कोमल आदि कई ऐसी सफल गायक जोड़ियाँ हैं जो पंजाबी युगल गायन के जरिए दशकों से पंजाबियों के दिलों में जोश भर रही हैं।

किस्सा कवि पंजाबी लोक कविता की एक लोकप्रिय शैली है। अधिकांश कहानियों का आधार बेशक प्रेम कहानियाँ हैं, लेकिन वे अपनी रचना के समय के सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक मूल्यों का व्यापक चित्र प्रस्तुत करके ऐतिहासिक तथ्यों का प्रमाणिक प्रमाण साबित होती हैं। किस्सा कवि का मुख्य आकर्षण कहानी है, इसलिए किस्सा गाते समय किस्सा के तत्त्वों का समावेश होना स्वाभाविक है। कई संगीत नाटक पंजाब की लोक कविता से संबंधित उपाख्यानों पर आधारित हैं। कहानियों का नाटकीयकरण भी पश्चिमी शैली के ओपेरा के तत्त्वों से मिलता-जुलता है। ओपेरा के आधार पर कुछ पंजाबी नाटक भी बनाए गए लेकिन नाटककारों को पंजाबी ओपेरा के मंचन में अधिक सफलता नहीं मिली। पंजाबी संस्कृति में कहानी गायन और मंचन का चलन सदियों पुराना है। 'मुगल काल में पंजाब के गाँवों की चौपालों पर नट आया करते थे। गाँव के मध्य में अग्नि की मशाल जलाई जाती थी। गाँव के सभी लोग सर्दियों में जलती हुई आग के पास इन नटों को देखने के लिए सारी रात बैठे रहते थे। यह नट हीर रांझा, सोहनी महिवाल, पूरन भगत और पूरन भगत, सीना बी सीना चलीं आ रहीं इन लोकप्रिय लोक कथाओं को पूरी वैराग के साथ गाते और नृत्य करते थे।' (नारंग 114) पंजाबी किस्सों में से हीर वारिश शाह में हीर और रांझे, रांझे और भाईओं, हीर और काजी के संवाद नाटकीय तत्त्वों से भरपूर हैं। इसी प्रकार मिर्जा और साहिबां के, अमली और साहिबां के, भाभियों और मिर्जा के, भाइयों और मिर्जा के बीच के संवाद भी मिर्जा साहिबां के किस्से में नाटकीय तत्त्वों को उजागर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

लोक गायन की तरह लोक नृत्य में भी नाटकीय तत्त्व विद्यमान होते हैं। झूमर, गिद्दा और मालवई गिद्दा नाट की प्रधानता की दृष्टि से प्रमुख हैं। झूमर नाटकीय तत्त्वों से भरपूर एक लोक नृत्य शैली है। वस्तुतः इसमें नाटक और नृत्य का समान रूप से समावेश है। इसमें कोई कहानी नहीं है लेकिन संवाद या बोलियों की तरह लघु गीत खूब होते हैं। दरअसल, यह पुरुषों द्वारा किया जाने वाला महिलाओं का नृत्य है, जिसमें पुरुष महिलाओं की तरह व्यवहार करते हुए, महिलाओं की बोलियों का प्रयोग करते हुए नृत्य करते हैं। समग्र संरचना पारंपरिक लोक नृत्यों के समान है। नाटक के प्राथमिक भागों 'नृत्य और कहानी सुनने की चेष्टा' से उत्पन्न सौंदर्यात्मक स्वाद झूमर में मौजूद हैं।

गिद्दा बनाम तमाशा पंजाब की युवतियों का प्रमुख लोक नृत्य है। गिद्दा बेशक लोक नृत्य का एक रूप है, लेकिन गिद्दा में प्रस्तुत किया गया तमाशा दो अभिनेताओं के लघु नाटक का आभास देता है। कभी-कभी कोई पात्र गिद्दा कर रहीं कलाकारों के साथ संवाद करता है। वस्तुतः नाटक की उत्पत्ति नृत्य और कथा के संयोग से हुई है। 'लोकनाट्यों का मुख्य आधार नृत्य है। विश्व के सभी देशों में नृत्य से नाटक की उत्पत्ति हुई है।' (बख्शिश सिंह 25) उपरोक्त अवधारणा नाट कला के मूल स्रोत की ओर ध्यान आकर्षित करती है जिसमें नृत्य में कहानी के संयोजन को नाट कला की उत्पत्ति का आधार माना जाता है। इसके अलावा नृत्य शारीरिक अंगों के संचालन के माध्यम से किसी क्रिया या भाव को व्यक्त करने की कला है। जब इस नृत्य में स्वर और लय का समावेश हो जाता है तो यह नृत्य का रूप धारण कर लेता है। गिद्दा में अंगों की गति, भावनाओं की अभिव्यक्ति, तमाशे का केंद्रीय स्रोत कहानी है। 'पंजाबी लोक नृत्य की अधिकांश विधाएँ भी नृत्य से ही विकसित हुई हैं। पंजाब की नृत्य कला आर्य लोगों के भारत आने से पहले ही प्रचलित थी.... भरत मुनि ने अपने नाट्य शास्त्र में राज (रास) नृत्य को तीन भागों में विभाजित किया है जिसमें ताल रासक बिल्कुल पंजाब के गिद्दा का रूप है।' (औलख 100)

मलवई गिद्दा पूर्णतः मालवा की देन है। इस लोक नृत्य की उत्पत्ति इस बात से हुई कि फसलों का काम निपटने के बाद किसान मौज-मस्ती करते बोलियाँ डालते हैं और नृत्य करते हैं। प्रारंभिक काल में खेत ही उनका मंच होता था। इसमें कलाकार गोल घेरे में खड़े होकर अपनी बोलियाँ दोहराते हैं। बोली के अंत में, बोली लगाने वाला और उसका साथी मंच के केंद्र में आते हैं और अपने-अपने वाद्ययंत्र बजाते हुए नृत्य करते हैं। बोली के अंत में समूह के सभी सदस्य गाना गाकर मुख्य गायक के साथ शामिल होते हैं। टीम के सभी सदस्य बारी-बारी से भीड़ के बीच में आते हैं और बोली लगाते हैं। बोली लगाते समय, बोली लगाने वाला अपने सहकर्मियों और कभी-कभी दर्शकों को संबोधित करता है और बोली लगाता है। बोली लगाने वाला, बोली लगाते समय, अन्य साथी कलाकारों से प्रतिक्रिया की आशा में बोली को आगे बढ़ाता है। संवाद एकतरफा लेकिन नाटकीय है। बोली के बीच में कभी-कभी बोली के अनुरूप छोटे-छोटे प्रश्न भी पूछे जाते हैं जो बोली को नाटकीय रूप देने में मदद करते हैं।

तथ्यों के उपरोक्त विश्लेषण के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यद्यपि पंजाबी लोक संगीत हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की तरह गायन, वादन और नृत्य का एक संयोजन है, लेकिन लोक गायन और लोक नृत्य में नाट कला के गुर अप्रत्यक्ष रूप से उपयोग किए जाते हैं। प्राचीन काल से लेकर अब तक नाट कला और नृत्य कला एक-दूसरे की पूरक रही हैं। नाट कला में नृत्य गुप्त रूप से निहित रहता है। आधुनिक काल में ये दोनों कलाएँ पूर्णतः स्वतंत्र हैं। इसलिए यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि संगीत गायन, वादन, नृत्य और नाटक का मिश्रण है।

पाद-टिप्पणियाँ

1. कविशरी–कवि द्वारा लिखित
2. वार–पुरुषों द्वारा प्रस्तुत वीर रसी गायन शैली
3. दोगाना गायकी–युगल गायन
4. किस्सा गायन– किस्सा गायन–महान योद्धाओं/नायकों के जीवन पर आधारित लिखी/गायी गयीं रचनाएँ
5. झूमर–पुरुषों द्वारा की जाने वाली एक लोक नृत्य शैली
6. गिद्दा–पंजाबी महिलाओं का लोक नृत्य
7. मलवई गिद्दा–पंजाब के मालवा क्षेत्र में लोकप्रिय पुरुषों द्वारा की जाने वाली एक लोक नृत्य शैली।
8. ढ़ड़–डमरू जैसे दिखने वाला एक लोक साज।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

गुरनाम सिंह, पंजाबी संगीतकार, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1989, पृ. 1.

तारा सिंह, पंजाब दे प्रसिद्ध संगीतकार, भाषा विभाग, पंजाब, 1983, पृ. 10

पंजाब विच्च संगीत, नाट अते चित्र कला-कुछ विचार, चौथी पंजाबी विकास कान्फ्रेंस, पंजाबी लोक नाट दी परंपरा, अजीत सिंह औलख, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1989, पृ 98.

वही, पृ. 97.

https://francispress.com/uploads/papers

https://www.linkedin.com/pulse/techniques-artistes

https://www.researchgate.net/publication/38136200

नाभा, भाई कान्ह सिंह, महान कोश, पृ. 234

पंजाब विच्च संगीत, नाट अते चित्र कला-कुछ विचार, चौथी पंजाबी विकास कान्फ्रेंस, पंजाबी किस्सा काव विच्च लोक नाट अंश, डॉ. सी. एल. नारंग, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, पृ. 114.

खोज पत्रिका-नाटक विशेष अंक, मुख्य संपादक प्रोफेसर रतन सिंह जग्गी, पंजाबी लोक नाट दी परंपरा, बख्शीश सिंह, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2000, पृ. 25.

पंजाब विच्च संगीत, नाट अते चित्र कला-कुछ विचार, चौथी पंजाबी विकास कान्फ्रेंस, पंजाबी लोक नाट दी परंपरा, अजीत सिंह औलख, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1989, पृ. 100